दीक्षा

गुरु के प्रति श्रद्धा तो हो किंतु शिष्य में स्वतंत्र चिंतन की भी शक्ति होनी चाहिये। जिन देशों में इस प्रकार के गुरु शिष्य संबंध की उपेक्षा हुई है, वहां गुरु एक वक्ता मात्र रह गया है। गुरु को मतलब रहता है अपनी 'दक्षिणा' से और शिष्य को मतलब रहता है गुरु के 'शब्दों' से, जिन्हें वह अपने मस्तिष्क में ठूंस लेना चाहता है। यह हो गया कि बस दोनों अपना अपना रास्ता नापते हैं। पर यह भी सत्य है कि किसी के प्रति अंधी भक्ति से मनुष्य की प्रवृत्ति दुर्बलता और व्यक्तित्व की उपासना की ओर झुकने लगती है अपने गुरु की पूजा ईश्वर दृष्टि से करो, पर उनकी आज्ञा का पालन आँखें मूँदकर न करो। प्रेम तो उन पर पूर्ण करो, परंतु स्वयं भी स्वतंत्र रूप से विचार करो।

– स्वामी विवेकानंद

शिक्षा

पुस्तकों से शिक्षा ग्रहण की जा सकती है, परंतु इस प्रकार से प्राप्त किया हुआ ज्ञान आत्मा की गहराई में नहीं उतरता, वह मानव की प्रकृति का अंग नहीं बनता। उसके द्वारा रूपांतरित नहीं होता। रूपांतरण के लिये यह आवश्यक है कि कुछ क्षणों के लिये पूर्णतया शांत होकर बैठा जाए और यह देखा जाये कि जो विद्या तुमने ग्रहण की, जो ज्ञान तुमने प्राप्त किया है, उसका रूपांतरण हो।

– सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन

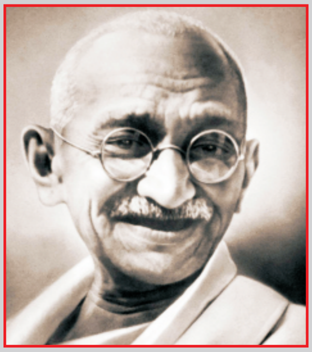

स्वतंत्रता

मैं व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व देता हूं, परंतु आपको यह नहीं भूलना चाहिये कि मनुष्य मूल रूप में एक सामाजिक प्राणी है। वह सामाजिक प्रगति की आवश्यकताओं से अपनी वैयक्तिकता को समायोजन करना सीखकर ही अपनी वर्तमान स्थिति पर ऊँचा उठा है। अनियंत्रित वैयक्तिकता जंगल के पशु का नियम है। हमने व्यक्तिगत स्वतंत्रता और सामाजिक नियंत्रण में मध्यमार्ग निकालना सीखा है। समस्त समाज के कल्याण हेतु सामाजिक नियंत्रण के प्रति जानबूझकर समर्पण करने से व्यक्ति और उस समाज दोनों की समृद्धि होती है, जिसका कि वह सदस्य है।

– महात्मा गांधी